International Journal of Advanced Research in Engineering Technology & Science
ISSN: 2394-2819
Impact Factor: 7.10
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
Email: editor@ijarets.org Volume-11, Issue-1 January – 2024 www.ijarets.org

अंग्रेजो के समकालीन भारत में उच्च शिक्षा के विकास ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 पवनेश कुमार

श्री गॉधी इण्टर कालेज घेडी बछेडा सेक्टर म्यू 2 ग्रेटर नोयडा

गौतम बुद्व नगर उत्तर प्रदेश

सारांश, भारत में पश्चिमी शैली की शिक्षा के आगमन से बहुत पहले, उपमहाद्वीप में ज्ञान और विद्वत्ता की समृद्ध परंपरा रही है। भारत में उच्च शिक्षा की उत्पत्ति नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन संस्थानों से मानी जा सकती है। ये प्राचीन विश्वविद्यालय विश्व प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र थे, जो दुनिया भर से छात्रों को आकर्षित करते थे। भारत में उच्च शिक्षा का एक लंबा और आकर्षक इतिहास रहा है, जो स्वदेशी परंपराओं, विदेशी प्रभावों और परिवर्तनकारी सुधारों के मिश्रण से आकारित हुआ है। यह समझने के लिए कि भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली आज कहाँ खड़ी है, इसके ऐतिहासिक विकास पर एक नजर डालना महत्वपूर्ण है। नालंदा और तक्षशिला के प्राचीन विश्वविद्यालयों से लेकर ब्रिटिश शासन के तहत औपनिवेशिक नीतियों और स्वतंत्रता के बाद के परिवर्तनकारी सुधारों तक, भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इस ब्लॉग में, हम इन चरणों की यात्रा करेंगे और जानेंगे कि उन्होंने भारत में उच्च शिक्षा के विकास में कैसे योगदान दिया है। भारत में उच्च शिक्षा के प्रारंभिक इतिहास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला एक अन्य प्रमुख संस्थान तक्षशिला था, जो वर्तमान पाकिस्तान में स्थित था। तक्षशिला की स्थापना लगभग 700 ईसा पूर्व हुई थी और प्राचीन काल में यह शिक्षा और ज्ञान का एक प्रमुख केंद्र था। यह एक बहुविषयक संस्थान था जो राजनीति विज्ञान, चिकित्सा, दर्शनशास्त्र, सैन्य रणनीति और व्याकरण जैसे विषयों में पाठ्यक्रम प्रदान करता था। तक्षशिला की शिक्षा प्रणाली में व्यावहारिक ज्ञान पर जोर दिया जाता था, और शिक्षक अक्सर विविध पृष्ठभूमियों से आते थे। यह विश्वविद्यालय संस्कृतियों का संगम स्थल था, जहाँ ग्रीस, चीन और मध्य एशिया सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए छात्र और विद्वान भारतीय छात्रों के साथ अध्ययन करते थे। सैद्धांतिक और व्यावहारिक शिक्षा दोनों पर जोर देने के कारण यह संस्थान भारत के प्रारंभिक शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

परिचय, वर्तमान बिहार में स्थित नालंदा विश्वविद्यालय, प्राचीन भारत के सबसे प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों में से एक था। लगभग 5वीं शताब्दी ईस्वी में स्थापित, यह आधुनिक अर्थों में केवल एक विश्वविद्यालय ही नहीं था, बल्कि कई इमारतों, पुस्तकालयों और शिक्षण कक्षों से युक्त एक विशाल परिसर था। नालंदा ने चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, मंगोलिया और दक्षिण पूर्व एशिया सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों से छात्रों और विद्वानों को आकर्षित किया। यहाँ पढ़ाए जाने वाले विषयों में बौद्ध दर्शन और तर्क से लेकर गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और भाषा विज्ञान तक शामिल थे इस संस्थान का पाठ्यक्रम सुव्यवस्थित था, जिसमें कठोर प्रवेश परीक्षाएँ और छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन

करने वाली ग्रेड प्रणाली शामिल थी। नालंदा सदियों तक ज्ञान का केंद्र बना रहा, जब तक कि 12वीं शताब्दी में बख्तियार खिलजी की सेनाओं द्वारा इसे नष्ट नहीं कर दिया गया । अपने पतन के बावजूद, नालंदा का शिक्षा और विद्या पर प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप और उससे परे भी जारी रहा।

भारत में औपनिवेशिक काल, विशेषकर ब्रिटिश शासन के दौरान, देश की उच्च शिक्षा प्रणाली पर गहरा प्रभाव पड़ा। अंग्रेजों ने अनेक सुधार और संस्थाएँ स्थापित कीं, साथ ही एक ऐसी विरासत भी छोड़ी जिसने पीढ़ियों तक भारतीय शिक्षा की दिशा को प्रभावित किया। इस कालखंड के प्रमुख घटनाक्रमों को समझना भारत में उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन शिक्षा को भारत पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के एक साधन के रूप में देखता था। इसका प्राथमिक लक्ष्य शिक्षित भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो ब्रिटिश शासकों और जनता के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य कर सके। अंग्रेजों ने पश्चिमी शैली की शिक्षा प्रणाली शुरू की, जो अंग्रेजी भाषा, यूरोपीय इतिहास और पश्चिमी विज्ञान पर केंद्रित थी। सबसे शुरुआती और महत्वपूर्ण पहलों में से एक पश्चिमी विश्वविद्यालयों के मॉडल पर आधारित संस्थानों की स्थापना थी। यह मुख्य रूप से ब्रिटिश नौकरशाही में शिक्षित पेशेवरों की बढ़ती मांग के जवाब में किया गया था। पहले विश्वविद्यालय 19वीं शताब्दी में कलकत्ता (कोलकाता), बॉम्बे (मुंबई) और मद्रास (चेन्नई) जैसे प्रमुख शहरों में स्थापित किए गए थे।

1854 में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष सर चार्ल्स वुड ने वुड्स डिस्पैच जारी किया, जिसने भारत में उच्च शिक्षा की रूपरेखा तैयार की। डिस्पैच ने सभी स्तरों पर शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर दिया और एक ऐसी शिक्षा प्रणाली स्थापित करने की मांग की जो ब्रिटिश प्रशासन का समर्थन करने में सक्षम व्यक्तियों का एक वर्ग तैयार करे। इस दस्तावेज को अक्सर भारतीय शिक्षा का मैग्ना कार्टा माना जाता है। वुड के डिस्पैच की प्रमुख सिफारिशों में से एक औपचारिक शिक्षा प्रणाली प्रदान करने के लिए प्रमुख शहरों में विश्वविद्यालयों की स्थापना थी। परिणामस्वरूप, कलकत्ता विश्वविद्यालय (1857), बॉम्बे विश्वविद्यालय (1857) और मद्रास विश्वविद्यालय (1857) की स्थापना हुई। इन संस्थानों ने उच्च शिक्षा के ब्रिटिश मॉडल का अनुसरण किया और कानून, चिकित्सा और मानविकी जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया। वुड्स डिस्पैच ने भारत में उच्च शिक्षा की नींव रखी, लेकिन इसने शिक्षा की औपनिवेशिक संरचना को भी मजबूत किया, जिसमें स्वदेशी ज्ञान को बढ़ावा देने या भारतीय आबादी की जरूरतों को पूरा करने के बजाय ब्रिटिश साम्राज्य की जरूरतों को पूरा करने पर जोर दिया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य आलोचनात्मक विचारकों या नवप्रवर्तकों को विकसित करने के बजाय ब्रिटिश प्रशासन के लिए क्लर्क और पेशेवर तैयार करना था।

औपनिवेशिक उच्च शिक्षा में वैश्वीकरण की भूमिका और 21वीं सदी

21वीं सदी के आगे बढ़ने के साथ ही भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली का वैश्वीकरण तेजी से हुआ। इंटरनेट और डिजिटल प्रौद्योगिकियों के उदय के साथ, सीखने और सहयोग के नए अवसर उभरे। भारतीय विश्वविद्यालयों ने

वैश्विक रैंकिंग, छात्र विनिमय कार्यक्रमों और विदेशों के संस्थानों के साथ अनुसंधान साझेदारी पर अधिक ध्यान देना शुरू किया। भारत सरकार ने उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें शुरू कीं, जैसे कि राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग ढांचा (एनआईआरएफ) की स्थापना और संस्थानों की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने के लिए मान्यता निकायों को बढ़ावा देना । इन उपायों का उद्देश्य भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षण और अनुसंधान दोनों के मानकों में सुधार करना था। नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्रों से लेकर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के प्रभाव और स्वतंत्रता के बाद के परिवर्तनकारी सुधारों तक, भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली ने एक उल्लेखनीय यात्रा तय की है। आज, भारत विश्व के कुछ सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों और संस्थानों का घर है, जो दुनिया भर से छात्रों को आकर्षित करते हैं। हालांकि, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच, क्षेत्रीय असमानताएं और नवाचार की आवश्यकता जैसी चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। जैसे–जैसे हम भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं, भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली को तेजी से वैश्वीकृत और ज्ञान–आधारित दुनिया की मांगों को पूरा करने के लिए निरंतर विकसित होने की आवश्यकता होगी।

औपनिवेशिक कालीन भारत में उच्च शिक्षा का विकास ब्रिटिश औपनिवेशिक हितों, पाश्चात्य ज्ञान के प्रसार और भारतीय पुनर्जागरण का एक जटिल मिश्रण था। 1813 के चार्टर एक्ट से शुरू होकर 1857 के कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास विश्वविद्यालयों की स्थापना के साथ, अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने पारंपरिक गुरुकुलों का स्थान लिया। यह नीति प्रशासनिक कार्यों के लिए भारतीय क्लर्क तैयार करने पर केंद्रित थी, लेकिन इसने आधुनिक वैज्ञानिक सोच और राष्ट्रवाद को भी जन्म दिया।

औपनिवेशिक भारत में शिक्षा का विकास ब्रिटिश प्राथमिकताओं (प्रशासनिक सुविधा, ईसाई धर्म, और औपनिवेशिक वफादारी) के तहत हुआ। 1835 के मैकाले मिनट से अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत हुई, जो 1854 के वुड डिस्पैच (शिक्षा का मैग्नाकार्टा) और बाद में सार्जेंट रिपोर्ट (1944) तक जारी रही। इस नीति ने स्वदेशी शिक्षा की उपेक्षा कर अंग्रेजी माध्यम को प्राथमिकता दी।

औपनिवेशिक भारत में उच्च शिक्षा विकास के प्रमुख चरण और प्रभाव

- प्रारंभिक चरण (1813 से पहले) ईस्ट इंडिया कंपनी ने शिक्षा में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाई।
- 1813 का चार्टर एक्ट शिक्षा के लिए प्रति वर्ष 1 लाख रुपये का प्रावधान किया गया, जो पश्चिमी ज्ञान के प्रसार के लिए था।
- प्राच्य–पाश्चात्य विवाद (1835) प्राच्यवादियों (स्थानीय भाषा) बनाम पाश्चात्यवादियों (अंग्रेजी) के विवाद में मैकाले ने पाश्चात्य शिक्षा का समर्थन किया। मैकाले मिनट ने पश्चिमी साहित्य और विज्ञान के प्रसार पर जोर दिया।
- अंग्रेजी शिक्षा अधिनियम, 1835 औपचारिक रूप से अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया।
- वुड का डिस्पैच (1854) इसे भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है, जिसने प्राथमिक शिक्षा के लिए स्थानीय भाषा और उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी को अनिवार्य किया। इसने विश्वविद्यालयों की स्थापना की नींव रखी।

➢ सार्जेंट रिपोर्ट (1944) इसका उद्देश्य 6–14 वर्ष के बच्चों के लिए अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना था।

शोध पूर्व साहित्यक अवलोकन

शोध पूर्व साहित्यक अवलोकन की परिभाषा

किसी भी विषय शोध कार्य की विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धांतों या शोध पूर्व साहित्यिक अवलोकन की एवं शोध से भलीभांति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने हेतु व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारंभिक अवस्था में इसके सिद्धांत तक एवं शोध पूर्व साहित्य की समीक्षा करनी होती है। शोध पूर्व साहित्यिक अवलोकन की परिभाषा निम्नलिखित विद्वानों द्वारा दी गई हैं। जैसे–

गुड , बार और स्केट्स के अनुसार, ''योग्य चिकित्सक को औषधि के क्षेत्र में हर नवीनतम अन्वेषण के साथ चलना चाहिए। शोधकर्ता को शैक्षिक सूचनाओं के साधनों और उपयोगी तथा उनके स्थापना से परिचित होना चाहिए।''

डब्ल्यू आर बर्ग के अनुसार,''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उसकी नेम को बनता है जिसके ऊपर भविष्य का कार्य किया जाता है यदि हम साहित्य की समीक्षा द्वारा प्रदान किए गए ज्ञान की नियम बनाने में असमर्थ होते हैं तो हमारा कार्य संभवतया तुच्छ और प्रायः उस कार्य की नकल मात्र ही होता है जो पहले ही किसी के द्वारा किया जा चुका है।''

विजेन्द्रपाल सिंह, भारतीय राष्ट्रवाद एवं आर्यसमाज आन्दोलन, जब संसद ने 1813 में ईस्ट इंडिया कंपनी के चार्टर को 20 वर्षों के लिए नवीनीकृत किया, तो उसने कंपनी को प्रति वर्ष 100 रुपये, साहित्य के पुनरुद्धार और संवर्धन तथा भारत के विद्वान मूल निवासियों को प्रोत्साहन देने और ब्रिटिश क्षेत्रों के निवासियों के बीच विज्ञान के ज्ञान के परिचय और संवर्धन के लिएष देने की आवश्यकता रखी। यह राशि शिक्षा के पारंपरिक स्वरूपों (और विषयवस्तु) के समर्थन में थी, जो (इंग्लैंड में अपने समकालीन समकक्षों की तरह) दृढ़ता से गैर–उपयोगितावादी थी।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार, महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति, 1813 में, त्रावणकोर के तत्कालीन ब्रिटिश रेजिडेंट कर्नल जॉन मुनरो और ऑर्थोडॉक्स सीरियन चर्च के एक विद्वान भिक्षु पुलिक्कोट्टिल डायोनिसियस द्वितीय के अनुरोध पर, त्रावणकोर की रानी गौरी पार्वती बाई ने त्रावणकोर के कोट्टायम में एक धर्मशास्त्र महाविद्यालय शुरू करने की अनुमति दी। रानी ने कर मुक्त 16 एकड़ भूमि, 20,000 रुपये और निर्माण के लिए आवश्यक लकड़ी प्रदान की। 18 फरवरी 1813 को इसकी नींव रखी गई और निर्माण कार्य 1815 तक पूरा हो गया।

लाला लाजपत राय, दि आर्य समाज, एडीशन –11, 1820 के दशक की शुरुआत में, ईस्ट इंडिया कंपनी के कुछ प्रशासक यह सवाल उठा रहे थे कि क्या यह धन का उचित उपयोग था। जेम्स मिल ने कहा कि कंपनी द्वारा स्थापित कलकत्ता के मदरसे (मोहम्मदन कॉलेज) और हिंदू कॉलेज का घोषित उद्देश्य स्थानीय लोगों के मन पर उनके साहित्य को बढ़ावा देकर सकारात्मक प्रभाव डालना था, लेकिन उनका मानना था कि कंपनी के धन का उपयोग प्राच्य शिक्षा को बढ़ावा देने के बजाय उपयोगी शिक्षा के लिए किया जाना चाहिए था।

सी.एम. चेकॉर, ''सम आस्पेक्ट्स ऑफ एजुकेशनल थॉट ऑफ इण्डिया''. इन एजुकेशनल एण्ड इनवेस्टीगेशन्स, वाल्यूम–1, इंग्लैंड में भी शिक्षा के क्षेत्र में लगभग इसी तरह के मुद्दे (शास्त्रीय शिक्षा बनाम उदार शिक्षा) उठ चुके थे। वहां के व्याकरणिक विद्यालय लैटिन या ग्रीक के अलावा अन्य विषयों में शिक्षा देने के लिए अनिच्छुक (या कानूनी रूप से असमर्थ) थे, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अपने पाठ्यक्रम का विस्तार करके आधुनिक विषयों को भी शामिल करना पड़ा। भारत में एक जटिल कारक यह था कि शास्त्रीय शिक्षा उपमहाद्वीप की विभिन्न परंपराओं के दृष्टिकोण और मान्यताओं को प्रतिबिंबित करती थी, जबकि अंग्रेजी शिक्षा स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं करती थी। साथ ही, यह आशंका भी थी कि यदि शास्त्रीय शिक्षा को समर्थन देना बंद कर दिया जाए तो भारत के विद्वान वर्ग में इसके प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया हो सकती है। मैकाले की पिछली टिप्पणियों को देखते हुए यह स्पष्ट होना चाहिए था कि वह क्या उत्तर चाह रहे थे। 1833 में हाउस ऑफ कॉमन्स में मैकाले (तत्कालीन लीड्स के सांसद) ने कंपनी के चार्टर के नवीनीकरण के पक्ष में बात की थी, जिसके शब्दों में उपमहाद्वीप की संस्कृति और समाज पर उनके अपने विचार पर्याप्त रूप से स्पष्ट हो जाते हैं।

इस बात में है कि शिक्षा केवल औपनिवेशिक नियंत्रण का माध्यम है और न ही उसके लिए सांस्कृतिक संघर्ष और सामाजिक जागरूकता का एक मंच है। इस अध्ययन में बताया गया है कि नवजागरण, सामाजिक सुधार आंदोलन और राष्ट्रवाद ने किस तरह से औपनिवेशिक शिक्षा के माध्यम से आकार लिया। हैं कि औपनिवेशिक उच्च शिक्षा का आरंभिक उद्देश्य भारतीय मानस को लंबे समय तक रोकना था, लेकिन काल में यही शिक्षा भारतीय जनमानस में प्रश्न, डोमिनिक की समीक्षा करना और आधुनिक विचारधारा को विचारधारा का स्वतंत्र का स्रोत बना हुआ है। इस प्रकार, यह शोध परियोजना औपनिवेशिक भारत की शिक्षा प्रणाली को केवल सत्ता के उपकरणों के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया के एक जटिल घटक के रूप में प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष, ब्रिटिश भारत के दौरान शिक्षा कई परिवर्तनों से गुजरी। अंग्रेजों ने शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए विभिन्न अधिनियम और नीतियां पेश कीं। 1813 का चार्टर एक्ट शिक्षा के आधुनिकीकरण की दिशा में पहला कदम था। ईसाई मिशनरियाँ लोगों को धर्म के बारे में सिखाती थीं लेकिन यह भी चाहती थीं कि वे ईसाई धर्म में परिवर्तित हो जाएँ। 1835 में मैकॉले के मिनट्स में कहा गया कि स्कूलों में केवल अंग्रेजी और पश्चिमी विषय ही पढ़ाये जाने चाहिए। 1854 में वुड्स डिस्पैच ने प्राथमिक विद्यालयों और कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को शुरू करने में भारतीय भाषाओं का उपयोग करने का सुझाव दिया। ब्रिटिश भारत के अधीन शिक्षा में अच्छे और बुरे बिंदु थे। उन्होंने संचार में मदद करने के लिए कुछ भारतीयों को शिक्षित किया, लेकिन उन्होंने सभी को शिक्षित करने पर ध्यान केंद्रित नहीं किया। हंटर और रैले आयोग जैसे आयोग अधिक लोगों के लिए शिक्षा में सुधार करना चाहते थे। उन्होंने अधिक अवसर देने के लिए विश्वविद्यालय और कॉलेज बनाए। वे भारतीय साहित्य को महत्वपूर्ण नहीं मानते थे। कुल मिलाकर, शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश भारत में ताकत और कमजोरियां थीं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 ऑल्टबैक, पीजी (2014). भारत की उच्च शिक्षा चुनौतियाँ। एशिया प्रशांत शिक्षा समीक्षा

2 चौधरी, एच. (2009). उच्च शिक्षा वित्त पोषण प्रस्तुति। इंस्टीट्यूट फॉर फिस्कल

3 अर्न्स्ट एंड यंग (2012) भारत में उच्च शिक्षा बारहवीं पंचवर्षीय योजना , (2012&2017) और उसके बाद

4 भारत सरकार (ए). (2013) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा मिशन।

5 भारत सरकार (बी). (2016). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2016: नई शिक्षा नीति के विकास के लिए समिति को रिपोर्ट।

6 भारत सरकार (सी). योजना आयोग. (2012). 12वीं पंचवर्षीय योजना (2012&2017)

7 भारत सरकार (डी). (2015&2016). पाँचवें वार्षिक रोजगार–बेरोजगारी सर्वेक्षण पर रिपोर्ट, खंड 1-

8 भारत सरकार (एफ). मानव संसाधन विकास मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट (2015&2016).

9 भारत सरकार (जी) भारत में शिक्षा। (2014)। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय।

10 कपूर, डी., और मेहता, पी.बी. (संपादक)। (2017)। भूलभुलैया में नेविगेट करना भारत की उच्च शिक्षा पर परिप्रेक्ष्य (पृष्ठ 1&38) दिल्ली

11 ड्यूश, एम. (2000). कॉन्फ्लिक्ट रिजॉल्यूशन ट्रेनिंग पर रिसर्च के बारे में सोचने के लिए एक फ्रेमवर्क। एम. ड्यूश और पी. टी. कोलमैन (एडिटर्स), द हैंडबुक ऑफ कॉन्फ्लिक्ट रिजॉल्यूशनरू थ्योरी एंड प्रैक्टिस (पेज 571–590)। सैन फ्रांसिस्कोरू जोसी–बास पब्लिकेशन्स।

12 ड्यूश, एम. (2002). कॉन्फ्लिक्ट रिजॉल्यूशन की स्टडी में सोशल साइकोलॉजी का योगदान। नेगोशिएशन जर्नल, 18(4), 307–320.

13 डेवी, जे. (1924). स्कूल और समाज। शिकागो यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

14 डिंकेस, आर., कैटाल्डी, ई. एफ., केना, जी., और बॉम, के. (2006). स्कूल क्राइम और सेफ्टी के इंडिकेटर्स 2006